प्रश्नः

''यदि उद्धार पाने के लिए आत्मा की अगुआई होनी आवश्यक है, तो आज हमें पवित्र आत्मा की अगुआई कैसे मिल सकती है?''

उज़रः

हाल ही के वर्षों में लोगों में पवित्र आत्मा में नये सिरे से दिलचस्पी पैदा हुई है, जिससे करिश्माई लहर की उत्पज़ि हुई है। इस लहर की मुज़्य विशेषता यह है कि इसमें शामिल लोग पवित्र आत्मा की सामर्थ से अन्य भाषाएं बोलने का दावा करते हैं। ज़्या वे वास्तव में ही अन्य भाषाएं बोलते हैं या नहीं? इस प्रश्न का ज्यादा महत्व नहीं है। परन्तु पवित्र आत्मा के बारे में जो सबसे महत्वपूर्ण प्रश्न है वह यह है कि हमारे उद्धार में पवित्र आत्मा की ज़्या भूमिका होती है?

हमारे उद्धार में पवित्र आत्मा का कुछ योगदान अवश्य है। हमें आत्मा से नया जन्म मिलता है (यूहन्ना 3:5); आत्मा में हमें धर्मी ठहराया जाता है (1 कुरिन्थियों 6:11); और आत्मा के नया बनाने के द्वारा हमारा उद्धार होता है (तीतुस 3:5)। आज यदि आप उद्धार पाना चाहते हैं, तो वह आत्मा के द्वारा ही सज़्भव है।

पवित्र आत्मा उद्धार कैसे करता है? इसका उज़र रोमियों 8:14 में मिलता है: ''इसलिए कि जितने लोग परमेश्वर के आत्मा के चलाए चलते हैं, वे ही परमेश्वर के पुत्र हैं।'' *मैं ज़ोर देकर कहता हूं कि आत्मा के द्वारा उद्धार पाने के लिए आत्मा की अगुआई में चलना*

आवश्यक है! फिर यह प्रश्न उठता है कि ''यदि उद्धार पाने के लिए आत्मा की अगुआई में चलना आवश्यक है, तो आज पवित्र आत्मा हमारी अगुआई कैसे करता है?'' आइए इसका उज़र पहले इस प्रश्न से देते हैं कि पवित्र आत्मा हमारी अगुआई *कैसे* करता है, और फिर यह कि पवित्र आत्मा हमारी अगुआई *कहां* करता है?

पवित्र आत्मा हमारी अगुआई कैसे करता है?

पवित्र आत्मा हमारी अगुआई कैसे करता है? इसकी कम से कम तीन सज़्भावनाएं बताई जा सकती हैं:

चमत्कारी ढंग से?

ज़्या आत्मा उद्धार में *सीधे और चमत्कारी ढंग से* हमारी अगुआई करता है? ज़्या वह हमसे रात के अंधेरे में बात करता है? ज़्या वह हमें विशेष प्रकाशन देता है? ज़्या आज लोगों को स्वर्गदूतों का दर्शन होता है? ज़्या परमेश्वर किसी से ''धीमे से, शांत स्वर'' में बात करता है?

यह सही है कि परमेश्वर ने पिछले समय में लोगों की अगुआई ऐसे ही की है। परन्तु केवल यही इस बात का प्रमाण नहीं है कि परमेश्वर आज के युग में भी लोगों की अगुआई वैसे ही करता है। ज़्यों? ज़्योंकि परमेश्वर ने अलग-अलग युगों में लोगों के साथ अलग-अलग ढंग से बातें की हैं। अलग-अलग समयों में वह लोगों से अलग-अलग ढंग से बात करता था (देखिए इब्रानियों 1:1, 2)। इसके अलावा, परमेश्वर अपनी कही गई बातों को नहीं दोहराता। उदाहरण के लिए, वह सृष्टि की रचना, अपने पुत्र को भेजने या बाइबल की प्रेरणा देने की बातों को फिर दोहराने वाला नहीं है। इसलिए न तो यह प्रश्न है कि ''परमेश्वर ने ज़्या किया है?'' और न ही यह कि ''परमेश्वर ज़्या कर सकता है?'' बल्कि प्रश्न यह है कि ''*आज* परमेश्वर ज़्या कर रहा *है?*''

बाइबल यह सिखाती है कि आश्चर्यकर्मों का युग बीत गया है, इसलिए हमारा सुझाव है कि परमेश्वर आज लोगों की अगुआई सीधे अर्थात प्रत्यक्ष या चमत्कारी ढंग से नहीं करता। मैं यह ज़्यों कहता हूं कि आश्चर्यकर्मों का युग बीत गया है? ज़्योंकि सबसे पहले इसे आत्मा की प्रेरणा से पौलुस ने कहा था! 1 कुरिन्थियों 12 में पौलुस ने पवित्र आत्मा के चमत्कारी या आश्चर्यकर्म के दानों की बात की थी। फिर 1 कुरिन्थियों 13 में उसने कहा कि ''जब सर्वसिद्ध आएगा'' तो चमत्कारी दानों का यह ढंग खत्म हो जाएगा (आयतें 8-10)। मेरा मानना है कि बिल्कुल ऐसे ही हुआ है! पवित्र आत्मा के अलौकिक दान जिसमें अन्य भाषाएं बोलने की योग्यता, चंगाई देने की योग्यता और चमत्कारी ज्ञान का दान शामिल है, अब नहीं हैं। अब उनकी आवश्यकता नहीं है। वे प्रेरितों द्वारा कहे गए वचन को दृढ़ करने के लिए दिए गए थे (मरकुस 16:17-20; इब्रानियों 2:2-4), परन्तु अब तो वह वचन दृढ़ हो चुका है। अब किसी प्रमाण की आवश्यकता नहीं है। आज लोग उस तरह चंगा नहीं होते जैसे नये नियम के समय में होते थे (उदाहरण के लिए, प्रेरितों 3 देखें, और उस आश्चर्यकर्म

की तुलना आज के तथाकथित आश्चर्यकर्मों से करें)। परमेश्वर के प्रकाशन के पूरा होने से, कलीसिया की परिपज़्वता का संकेत अलौकिक युग के खत्म हो जाने से मिला। अब ज़्योंकि अलौकिक दान नहीं दिए जाते, इसलिए हम पवित्र आत्मा से चमत्कारी या अलौकिक अगुआई पाने की अपेक्षा नहीं करते हैं।

यदि आत्मा लोगों के साथ सीधे और चमत्कारी ढंग से बात भी करता हो, तो भी ऐसा कोई संकेत नहीं है कि वह इस तरह से किसी का उद्धार करेगा! नये नियम में आत्मा की चमत्कारी अगुआई प्राय: उन लोगों को मिली जो पहले से ही मसीह के चेले थे, न कि मसीह की देह के बाहर के लोगों को। उदाहरण के लिए, *उन्हें* अर्थात प्रेरितों को भी ऐसी अगुआई हर समय नहीं मिलती थी। पौलुस और बरनबास ने इस बात पर बहस की कि दूसरी मिशनरी यात्रा पर वे अपने साथ यूहन्ना मरकुस को ले जाएं या नहीं। साफ़ है कि प्रभु ने उन पर यह प्रकट नहीं किया था कि वहां उनमें से कौन सही था।

नया नियम इस बात को स्पष्ट कर देता है कि प्रभु ने जब किसी विशेष व्यज़्ति को सुसमाचार सिखाना चाहा, तो उसने उसके पास सुसमाचार को ले जाने के लिए किसी व्यज़्ति या मनुष्य को ही भेजा था। उसने इथियोपिया में फिलिप्पुस को (प्रेरितों 8) और कुरनेलियुस के पास पतरस को ज़ेजा (प्रेरितों 10)। उसने इनमें से किसी का भी उद्धार सीधे हस्तक्षेप करके या चमत्कारी ढंग से अगुआई देकर *नहीं* किया।

यदि आप आत्मा की अगुआई से उद्धार पाना चाहते हैं, तो आत्मा के चमत्कारी ढंग से काम करने की अपेक्षा न करें। बल्कि कुरनेलियुस की तरह, किसी संदेशवाहक की राह देखें जो आपको आकर बताए कि उद्धार पाने के लिए ज़्या करना है (प्रेरितों 11:14)।

वचन के विशेष प्रकाश से?

शायद हम पूछें, तो फिर ज़्या आत्मा हमारी अगुआई *वचन के विशेष प्रकाशन से* करता है? कुछ लोगों का मानना है कि आपको उद्धार पाने के लिए आत्मा के विशेष प्रकाशन की आवश्यकता तो नहीं है, लेकिन बाइबल को समझने के लिए विशेष प्रकाशन ज़रूरी है। ज़्या यह सही है?

बाइबल को समझने के लिए परमेश्वर से सहायता मांगते हुए, प्रार्थनापूर्वक इसका अध्ययन करना चाहिए। (उदाहरणार्थ, देखिए याकूब 1:5.) परन्तु हम जो कहना चाहते हैं वह इससे आगे है। हमारा कहना यह है कि बाइबल को समझने के लिए आत्मा के प्रत्यक्ष या सीधे प्रकाशन की आवश्यकता है कि वह आकर, एक ही पल में सब कुछ स्पष्ट कर दे। ज़्या इस प्रकार प्रकाशन आवश्यक है?

नहीं, इसकी आवश्यकता नहीं है ज़्योंकि पवित्र आत्मा ने तो पहले ही हमें जो पुस्तक दी है हम उसे समझ सकते हैं! बाइबल इस बात का संकेत देती है कि यह इसीलिए दी गई थी कि लोग इसे पढ़कर समझ सकें। पौलुस ने कहा, ''जिस से तुम पढ़कर जान सकते हो, कि मैं मसीह का वह भेद कहां तक समझता हूं'' (इफिसियों 3:4)। पौलुस ने इफिसुस के लोगों से उज़्मीद की कि जो उसने लिखा था वे उसे *समझेंगे*। उसने उन्हें इसे समझने के लिए

चमत्कारी सहायता या ईश्वरीय प्रकाशन की आवश्यकता की उम्मीद नहीं की। वास्तव में, बाइबल पढ़ने पर, हमें पता चलेगा कि *कुछ* बातें ऐसी होंगी (न तो सारी और न हर बात, 2 पतरस 3:15 से) जिन्हें समझना कठिन होगा, परन्तु हम देखते हैं कि बाइबल की अधिकतर बातें आसानी से समझी जा सकती हैं।

मान लीजिए कि बाइबल को समझने के लिए पवित्र आत्मा का विशेष प्रकाशन आवश्यक है। इसका अर्थ यह होगा कि पवित्र आत्मा की बातों को समझने के लिए हमें उसकी ही आवश्यकता होगी, ज़्योंकि बाइबल हमें पवित्र आत्मा से ही मिली है (देखिए 2 तीमुथियुस 3:16, 17; 2 पतरस 1:20, 21)। उद्धार के लिए हमें परमेश्वर की दोहरी प्रेरणा से दिए गए संदेश की आवश्यकता होगी! ज़्या यह मानना तर्कसंगत है कि यदि बाइबल पवित्र आत्मा की प्रेरणा से दी गई है, तो उसने इतना निकज़्मा काम किया है कि अपने पाठकों को समझाने के लिए उसे फिर से उन्हें प्रेरणा देने की आवश्यकता होगी?

पहली सदी में प्रेरितों की बातों को समझने के लिए किसी विशेष प्रकाशन की आवश्यकता नहीं होती थी। जब पिन्तेकुस्त के दिन पतरस ने लोगों को मन फिराने और बपतिस्मा लेने के लिए कहा था, तो उन्हें यह अच्छी तरह से समझ आ गया था (प्रेरितों 2:38 से)। अब समझने या न समझने की कोई बात नहीं थी बल्कि उस संदेश को मानने या न मानने की बात थी। यही समस्या आज है: संदेश तो समझ में आ सकता है परन्तु कुछ लोगों को उसे न मानना अच्छा लगता है।

जब लोग आत्मा के प्रकाशन की खोज करने का दावा करते हैं, तो वास्तव में वे बाइबल को समझने में सहायता लेने में दिलचस्पी *नहीं* ले रहे होते हैं। वे इस उज़्मीद में हैं कि कोई उनके विश्वास को जो वे पहले से करते हैं, आकर उचित ठहरा दे! जिस कारण उनकी प्रार्थना होती है, ''हे प्रभु, मुझे इसे वैसे ही समझने में सहायता कर जैसा मेरा विश्वास है।''

इसलिए, आपकी आवश्यकता पवित्र आत्मा का विशेष प्रकाशन नहीं है। बल्कि आपके लिए ज़रूरी यह है कि आप पवित्र शास्त्र की स्पष्ट बातों को मानकर, उस पर विश्वास करें और उनकी आज्ञा मानें।

परमेश्वर के वचन के द्वारा?

पवित्र आत्मा उद्धार के लिए चमत्कारी ढंग से या वचन के विशेष प्रकाशन से अगुआई करने के बजाय, *परमेश्वर के वचन अर्थात बाइबल के द्वारा* अगुआई करता है।

प्रेरितों से की गई प्रतिज्ञा पर ध्यान दें: ''और वह [पवित्र आत्मा] आकर संसार को पाप और धार्मिकता और न्याय के विषय में निरुज़र करेगा। पाप के विषय में इसलिए कि वे मुझ पर विश्वास नहीं करते'' (यूहन्ना 16:8, 9)। उद्धार पाने के लिए, हमें पाप, धार्मिकता और न्याय के विषय में निरुज़र या कायल होना आवश्यक है! पर नये नियम के समय पवित्र आत्मा लोगों को कैसे निरुज़र करता था? प्रेरितों 2 अध्याय में हम पढ़ते हैं कि पतरस ने *प्रचार किया* कि यीशु ही मसीह भी है और प्रभु भी। इसका परिणाम ज़्या हुआ? लोग पाप

के विषय में निरुज़र हो गए: ''तब सुनने वालों के हृदय छिद गए, और वे पतरस और शेष प्रेरितों से पूछने लगे, कि हे भाइयो, हम ज़्या करें ?'' (प्रेरितों 2:37)। वे पवित्र आत्मा की प्रेरणा से किए गए वचन के प्रचार से निरुज़र हुए थे! हैरानी की बात नहीं कि पौलुस ने कहा कि ''... आत्मा की तलवार ... परमेश्वर का वचन है'' (इफिसियों 6:17)। आत्मा अपनी तलवार अर्थात परमेश्वर के वचन का इस्तेमाल छेदने, निरुज़र करने और कायल करने के लिए लोगों को उद्धार तक ले जाने में करता है।

बाइबल कहती है कि उद्धार पाने के लिए हम जल और आत्मा से जन्म लेते हैं या हमारे लिए जल और आत्मा से जन्म लेना आवश्यक है। इसलिए, हम *आत्मा से जन्म* लेते हैं (यूहन्ना 3:5, 9)। पर बाइबल यह भी सिखाती है कि हमारा नया जन्म *वचन के द्वारा* होता है ज़्योंकि हमने ''नाशमान नहीं पर अविनाशी बीज से परमेश्वर के जीवते और सदा ठहरने वाले वचन के द्वारा नया जन्म पाया है'' (1 पतरस 1:23)।

इसके अलावा, बाइबल कहती है कि हमें *आत्मा में पवित्र* किया जाता है: ''... तुम प्रभु यीशु मसीह के नाम से और हमारे परमेश्वर के आत्मा से धोए गए, और पवित्र हुए और धर्मी ठहरे'' (1 कुरिन्थियों 6:11)। बाइबल सिखाती है कि हमें *वचन के द्वारा* पवित्र किया जाता है। यीशु ने कहा, ''सत्य के द्वारा उन्हें पवित्र कर: तेरा वचन सत्य है'' (यूहन्ना 17:17)।

बाइबल सिखाती है कि हमारा *उद्धार आत्मा के द्वारा* होता है: ''जिसे उसने हमारे उद्धारकर्ता यीशु मसीह के द्वारा हम पर अधिकाई से उंडेला'' (तीतुस 3:5)। बाइबल यह भी कहती है कि हमारा उद्धार *वचन के द्वारा* होता है: ''... उस वचन को नम्रता से ग्रहण कर लो, जो हृदय में बोया गया और जो तुज़्हारे प्राणों का उद्धार कर सकता है'' (याकूब 1:21)।

इसलिए, हम दृढ़ता से कह सकते हैं कि *पवित्र आत्मा किसी के उद्धार के लिए जो कुछ भी करता है वह वचन के द्वारा ही करता है!* ज़्या आप पवित्र आत्मा के द्वारा उद्धार पाना चाहते हैं ? तो फिर पवित्र आत्मा की अगुआई में चलें। यदि आप आत्मा की अगुआई में चलना चाहते हैं, तो आपको उस वचन के द्वारा चलना होगा जिसकी प्रेरणा पवित्र आत्मा ने दी है।

पवित्र आत्मा हमारी अगुआई कहां करता है ?

पवित्र आत्मा हमें कहां ले जाता है ? उसने परमेश्वर के वचन को लिखने की प्रेरणा दी है। वह हमें उस वचन तक ले जाता है। पर पवित्र आत्मा हमें ज़्या करने के लिए कहता है ? इसका उज़र पाने के लिए, नया नियम पढ़ें।

मसीह में विश्वास

पहले तो वह आपको मसीह में विश्वास में ले जाता है। यीशु ने कहा कि सहायक अर्थात पवित्र आत्मा ने उसकी गवाही देनी थी (यूहन्ना 15:26) और यीशु की महिमा करनी थी (यूहन्ना 16:14)। हम देखते हैं कि पवित्र आत्मा की प्रेरणा से दिया गया वचन

(2 तीमुथियुस 3:16, 17) हम में विश्वास उत्पन्न करता है: ''सो विश्वास सुनने से, और सुनना मसीह के वचन से होता है'' (रोमियों 10:17)। प्रेरितों 2 में पिन्तेकुस्त के दिन पतरस के प्रचार का पहला परिणाम लोगों में विश्वास उत्पन्न होना है। उसने सुनने वालों को कायल कर दिया था कि यीशु ही मसीह है। तब ये *विश्वास करने वाले* पुकार उठे थे कि ''हम ज़्या करें?'' (प्रेरितों 2:36, 37)।

पाप के विषय में निरुज़र

दूसरा, पवित्र आत्मा आपको पाप के विषय में निरुज़र करता है। पिन्तेकुस्त के दिन यही तो हुआ था (प्रेरितों 2)। यीशु में विश्वास करने के बाद, लोगों के ''हृदय छिद गए'' थे। वे पाप के विषय में निरुज़र हो गए थे और वे जान गए थे कि वे किसी पापी या परमेश्वर की निन्दा करने वाले को नहीं बल्कि परमेश्वर के पुत्र अर्थात मसीहा को ही क्रूस पर चढ़ाने के दोषी थे। उन्हें अपनी गलती मान लेनी चाहिए थी! पर केवल वही अकेले नहीं थे। हमारे लिए भी इस बात को समझना आवश्यक है कि हम भी मसीह को क्रूस पर चढ़ाने के दोषी थे! वह हमारे भी पापों के लिए मारा गया। हमें भी पाप के विषय में निरुज़र होना चाहिए! यदि हम पाप के विषय में निरुज़र नहीं हुए हैं, तो हम उस वचन को सुनने से इन्कार कर रहे हैं!

मन फिराव

नया नियम पढ़ने पर, तीसरी बात आप पाते हैं कि पवित्र आत्मा मन फिराने में आपकी अगुआई करता है। जब लोगों ने विश्वास कर लिया था और अपने पापों को मान लिया था, तो पतरस ने उन्हें मन फिराने के लिए कहा (प्रेरितों 2:38)। यह मन फिराव पाप के विषय में निरुज़र होना नहीं बल्कि उस निरुज़र होने का परिणाम है। यह फिर से पाप न करने का निश्चय है। आज लोगों के लिए परमेश्वर का यही संदेश है: ''इसलिए परमेश्वर अज्ञानता के समयों से आनाकानी करके, अब हर जगह सब मनुष्यों को मन फिराने की आज्ञा देता है'' (प्रेरितों 17:30)। ज़्योंकि *सब* लोगों के लिए मन फिराना आवश्यक है इसलिए मान लें कि यह संदेश पवित्र आत्मा का ही है कि आप मन फिराएं!

क्षमा के लिए डुबकी

इसके बाद नया नियम पढ़ने पर आपको पता चलता है कि पवित्र आत्मा पापों की क्षमा के लिए डुबकी अर्थात पापों से क्षमा पाने के लिए पानी में बपतिस्मे के लिए आपकी अगुआई करता है। इस डुबकी का सज़्बन्ध पवित्र आत्मा से ही रहा है। यूहन्ना 3:5 को स्मरण करें जहां यीशु ने कहा कि हमारे लिए *जल* और *आत्मा* से जन्म लेना आवश्यक है। यहां ''आत्मा'' निश्चित तौर पर पवित्र आत्मा को ही कहा गया है और ''जल'' पानी के बपतिस्मे को। इसलिए, आत्मा से जन्म लेने का अर्थ, पानी में बपतिस्मा लेना ही है। पिन्तेकुस्त के दिन, पतरस ने पवित्र आत्मा की बातों का प्रचार किया था। उसने पवित्र

आत्मा की सामर्थ से, लोगों को उद्धार पाने के लिए ज़्या करने को कहा था? ''... मन फिराओ, ... अपने-अपने पापों की क्षमा के लिए ... बपतिस्मा ले'' (प्रेरितों 2:38)। पवित्र आत्मा ने जैसे पिन्तेकुस्त के दिन बपतिस्मा लेने के लिए लोगों की अगुआई की थी वैसे ही उसने प्रेरितों के काम में और हर मन परिवर्तन में भी की जिसका विवरण हमें नये नियम में मिलता है। मसीही बनने वालों की बपतिस्मा लेने में अगुआई की थी! प्रेरितों के काम की पुस्तक यह स्पष्ट करती है कि लोगों को बपतिस्मा दिया गया था। यदि पवित्र आत्मा ने उद्धार पाने के लिए उन लोगों को बपतिस्मा लेने में अगुआई की थी, तो आज भी आत्मा हमसे पापों की क्षमा के लिए बपतिस्मा लेने का आग्रह करता है!

मसीह की कलीसिया

नये नियम को पढ़ने पर, पांचवीं बात आप पाएंगे कि पवित्र आत्मा लोगों को मसीह की कलीसिया में ले जाता है। पिन्तेकुस्त के दिन की घटनाओं का परिणाम यही हुआ था। पवित्र आत्मा के संदेश को ग्रहण करने वालों ने बपतिस्मा लिया था और उन लोगों को उनमें ''मिला लिया'' गया था जिनसे उन्होंने वचन सुना था (प्रेरितों 2:41)। प्रेरितों 2:47 में हम पढ़ते हैं कि उद्धार पाने वालों को प्रभु प्रतिदिन अपनी कलीसिया में मिला लेता था (KJV)। कलीसिया के लिए शब्द मूल में नहीं है, परन्तु इसका विचार अवश्य है। इसके बाद से ही कलीसिया के अस्तित्व में होने का वर्णन मिलता है और बपतिस्मा लेने वालों को इसमें मिला लिया जाता था। 1 कुरिन्थियों 12:13 में पौलुस ने इसके बारे में यह कहा था: ''ज़्योंकि हम सब ने ... एक ही आत्मा के द्वारा एक देह होने के लिए बपतिस्मा लिया। ...'' यहां देह कलीसिया को कहा गया है (इफिसियों 1:22, 23)। यह देह या कलीसिया कौन सी है? एक ही कलीसिया है (इफिसियों 4:5)। यह मनुष्यों द्वारा बनाई हुई कोई कलीसिया नहीं बल्कि मसीह की कलीसिया है! (मत्ती 16:18)। पापों की क्षमा पाने के लिए बपतिस्मा लेने के लिए आत्मा की अगुआई में चलने पर आत्मा आपको प्रभु की कलीसिया में ले जाता है। उस कलीसिया में, पवित्र आत्मा के द्वारा दी गई और भी बहुत सी आशिषें और जिज़्मेदारियां हैं। आपको जीवन भर आराधना करने और विश्वास से काम करने की जिज़्मेदारी मिलती है। पर आप आश्वस्त हो सकते हैं कि आप यहां उद्धार पाए हुए लोगों के बीच में और, परमेश्वर के अनुग्रह से, यदि आप उसके वचन की अगुआई में चलते रहें, तो आपको स्वर्ग में घर मिलना तय है।

यहां पर कोई इस बात पर आपज़ि कर सकता है कि ''आत्मा ने तो मुझे इससे अलग बात में अगुआई दी थी।'' शायद आपको लगता है कि उसने उद्धार पाने के बजाय कुछ और करने के लिए आपकी अगुआई की, या उसने किसी दूसरी देह अर्थात साज़्प्रदायिक कलीसिया में जाने के लिए आपको अगुआई दी।

शायद आप सही कह रहे हैं कि आत्मा ने आपको किसी दूसरी दिशा में जाने में अगुआई दी। लेकिन प्रश्न यह है कि ज़्या वह परमेश्वर का आत्मा था? याद रखें कि बाइबल कहती है कि ''हे प्रियो, हर एक आत्मा की प्रतीति न करो: बरन आत्माओं को परखो, कि

वे परमेश्वर की ओर से हैं कि नहीं; ज़्योंकि बहुत से झूठे भविष्यवज़्ता जगत में निकल खड़े हुए हैं'' (1 यूहन्ना 4:1)। संसार में झूठे आत्मा और झूठे भविष्यवज़्ता भी तो हैं।

आपको यह कैसे पता चलेगा कि आप झूठे भविष्यवज़्ता की अगुआई में चले हैं या पवित्र आत्मा की अगुआई में? यह पूछकर कि जिसने भी आपकी अगुआई की उसने आपको वही बातें सिखाईं जो नये नियम के समय में पवित्र आत्मा ने लोगों की अगुआई के लिए बताई थीं! मैं ज़ोर देकर कहता हूं कि आप किसी दूसरे तर्क को मानें या न पर यह तथ्य तो आपको मानना ही पड़ेगा कि यदि आपकी अगुआई इन पांच बातों से कुछ कम या कुछ अलग करने के लिए हुई थी तो आपकी अगुआई पवित्र आत्मा के द्वारा *नहीं* हुई है!

सारांश

ज़्या आप आत्मा की अगुआई में चलेंगे? यदि वह इन्सान के रूप में यहां होता, तो आपको बताता कि जो कुछ इन विषयों पर बाइबल सिखाती है न तो उससे कम पढ़ो और न ज्यादा। उसका संदेश आप तक पहुंच चुका है। ज़्या आप इसे सुनेंगे? ज़्या आप इसकी आज्ञा का पालन करेंगे?